

ॐ नमो नारायणाय ॥ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ यैव तीर्थं विधिर्निर्दिष्टं
 पुण्यं कुरुते नान्यथा ॥ सर्वदा वै पश्यन् विगच्छन् च हृदं
 उरु नमस्कृत्य दादाव नमो मातुः जलसदादाव शिवानंदाय स्तुतयाम्
 ध्व ॥ संस्तुतं साग नमस्कृत्य पापयस्तु निर्वृत्तं नमो हिमालयगङ्गा नृप
 स्तुतं ॥ नमो शिवाय नमो नारायणाय सर्वपापहृत्वाय स्तुतं नमो मिथुन
 मातुः ॥ दक्षयज्ञे विष्णवे नमो ॥ धर्मधनयुक्ताय दक्षयज्ञे नमो ॥
 य ॥ अथ नमो कुरुक्षेत्राय ॥ दीक्षा महाकुरुक्षेत्रे ॐ नमो

नायायमनुधा॥ शि लावननमस्तु नमस्तु गिरु वणा शदि नैव विवृयास्तु
 माहादेव नमस्तु ॥ धन मार्क (७) यनिवपूजा ॥ ॥ धन धन काव कस्तु
 वंदाव जिपद किं यादाव पूजा याय ॥ ॥ मनु ॥ नमस्तु कस्तु वृया नमस्तु पल
 यधामि (७) मनुद शा पविष्टाय नय (७) धायनमस्तु ॥ अमनस्तु महा कस्तु
 ववायतमम्वट । नय (७) धन वमपाय कस्तु वृ क नमस्तु ॥ नमस्तु वद किं
 यादाव द्वाया सवलथ ॥ ॥ धन लिग वृ कस्तु वन ॥ गवृ क नमस्तु वयाय ॥
 ॥ ॥ धन लिग वृ कस्तु वन ॥ गवृ क नमस्तु वयाय ॥ वल
 मरुदा ।

रुद धन वृ क नमस्तु पूजा याय ॥ पार्थ नायायमनुधा ॥ नमस्तु हल वृ क नमस्तु
 नाय धान वृ क वृ कानक नमस्तु रुक वृ क वृ क ॥ नमस्तु वलि नायाय नमस्तु
 वृ क वृ क वृ क नमस्तु रुक वृ क वृ क ॥ ॥ धन धन काव यवम
 वृ क वृ क वृ क पूजा याय ॥ द्वा दश वृ क वृ क नमस्तु गवृ क पूजा याय ॥ ॥
 मनु कस्तु पार्थ नायाय ॥ जय कस्तु जगन्नाथ जय सवृ क नागन । जय वान वृ क नि
 धन जय कस्तु निमूद न ॥ जय यध विष्णु वृ क जय वृ क गदाधन जय नीलाम्बर
 मनु जय सर्व सवृ क ॥ जय दव जगत्पुत्र जय सीता वृ क सता जय लाकयन

नाथ ऊयवां कुरु सयुक्त ॥ संसात सागवधा वं निःसा वं ह्य न वञ्चु लं । काधम
 हाक स नीद विषयाद क संवृत्त ॥ नाना लो (ग) भि क लि त्तं भा व क्तं सु द क्तं न
 । निम (ना) हं सु व (ग) ष्टु णा हि मां पृ व्धा रु म ॥ ध म नु प द पा व द न न या का व द थ
 ऊ व ल पा व द धु य न म या य ॥ **॥ ध त ध न का व स रु दा द र्ग न या य ॥** गी ध
 मू य धू पा दि न पू ज ॥ ध म नु न पार्थ ना या य ॥ न म स्तु स र्व द द वि न म स्तु स र्व सो र य
 द । णा हि मां प द्म प णा क का त्या य नि न मा स्तु तं ॥ ध त ध न का व हा थ ऊ व ल पा व द
 धु य न म या य ॥ **॥ ध न नि न मि र म धु य व न द र्ग न या य र्थ या य वा न पू ज ॥**

न म स्तु द द धु य न म य द कि न स म स्तु ध न क ॥ **॥ ध त ध न का व स रु दा द र्ग न या य**
॥ ध त मा ध व द र्ग न या य ॥ **॥ ध का ना दि द्वा द न म न न पू ज ॥** **॥ ध त मा ध**
व स रु दा द द पा व न म स्तु व या का व ॥ **॥ म स्तु मा ध व द र्ग न या त व न वि धा**
न र्थ पू ज या य ॥ **॥ ध त ध न का व स मू ड ग स्ना न या त व न स र्व दा वू य स रु कि**
ष ण पू र्ण मि त्रा दि न य ग रु ॥ **स मू ड स स्ना न वि धिः ॥** ना वा य न स म व न या का व पू ज
 या का व ध म नु न स्ना न या य ॥ त्व म नि दि लि षां ना थ व ता धा का म मा ध न धा प धा
 न र्थ ता नां जी वा नां व रु व य य ॥ अ मृ त सा ग नि ह्नि हि द व या नि व र्ण य त ।

॥
 ॥
 ॥
 ॥

मन्त्रित्वात्तुर्विधुः पुरातनः सतीतवक्त्रवः ॥ विलम्बनः ॥ नवजा
नामिः ॥ यथा नैवयकं नैव। मया निवदिता नृगन्धान् प्रतिगृह्य विलम्बने ॥ ॥ उपवी
तमरु। मया मया समरुग। निर्मितं यद्यथा निना। सावित्रीयन्त्रिसेयकं मया वीतं त
थाद्युतं ॥ ॥ अतीकात्रमरु ॥ दिश्वरत्नसमायकं वक्रितानुसमयकं। मया गितवत्
रुक् सावैकालानिमाधव ॥ ॥ धूपमरु ॥ वनस्यतिवसादिश्या गन्धाद्यः सूत्रलिप्यता
मया निवदिता रुक्सा धूपार्थं प्रतिगृह्यता ॥ ॥ दीपमरु ॥ सूर्यावलम्बमसाक्षाति विद्यद
त्वात्तुर्विधुः पुरातनः सतीतवक्त्रवः दीपार्थं प्रतिगृह्यता ॥ ॥ नेवयमरु ॥ अर्चनं वरु

विधं नेवयमरु ॥ सति समन्वितं मया निवदिता रुक्सा नेवयं तवक्त्रवः ॥ ॥ नमा
नामिः ॥ यथा नैवयकं नैव। मया निवदिता नृगन्धान् प्रतिगृह्य विलम्बने ॥ ॥ उपवी
तमरु। मया मया समरुग। निर्मितं यद्यथा निना। सावित्रीयन्त्रिसेयकं मया वीतं त
थाद्युतं ॥ ॥ अतीकात्रमरु ॥ दिश्वरत्नसमायकं वक्रितानुसमयकं। मया गितवत्
रुक् सावैकालानिमाधव ॥ ॥ धूपमरु ॥ वनस्यतिवसादिश्या गन्धाद्यः सूत्रलिप्यता
मया निवदिता रुक्सा धूपार्थं प्रतिगृह्यता ॥ ॥ दीपमरु ॥ सूर्यावलम्बमसाक्षाति विद्यद
त्वात्तुर्विधुः पुरातनः सतीतवक्त्रवः दीपार्थं प्रतिगृह्यता ॥ ॥ नेवयमरु ॥ अर्चनं वरु

दिन वासुधादिन दक्षिण विषय ॥ ॥ धनैरिह लुब्धम सवाव वर्वदा व आच
 न न निरुद्धा व रुद्र त्वं श्री व न य धनैरिह मनु य दया व स्नान या या ॥ अश्व म ध
 म सैरु त तीर्थ सर्व घ ना ग न स्नान त्व मिक वा म घ पाप ह व न मा नु त ॥ ॥
 द द न य न पिह त य न या द व प न्था रु म पूजा या या ॥ न का द गी द्वा द गी रु या द
 गी रु उ द गी पू र्ण मि सैका नि न द त सा व रु ता न द र्ण न या म ॥ अरु न क ष ग रु ॥
 ॥ ॥ मार्क ॥ धर्म वट कृष्ण नो हि ध र्म महा द धि ॥ लुब्धम सत्र (धैव प व तीर्थ वि
 धि स्मृत ॥ धर्म प व तीर्थ विधि ॥ ॥ धनैरिह लुब्धम सत्र (धैव प व तीर्थ वि
 धि स्मृत ॥ धर्म प व तीर्थ विधि ॥ ॥ धनैरिह लुब्धम सत्र (धैव प व तीर्थ वि

क मिन स्नान उ य वा स या य सि धि र्म त व प व पा प वा व पूजा ॥ दान प न्या दिय आ
 ॥ (थ का म धर्म द र्ण ग या य पूजा रु ता दिय आ ॥ ॥ विन्द सत्र म क व नी स स्नान
 विष्व सैका नि न या या दिन ग रु धी सैका नि उ ल म क व म ध क र्क ट यू ग दि सा दा
 न पि धु दा ना दिय आ ॥ धर्म ध न का व की र्ति वा स य व म ध व त्वै पूजा म रु मृ त
 पूजा स्नान पु द क्षि ण दि ॥ नि व रु ति आ दिन दी य दा ना दिय आ ॥ वासु धा द क्षि ण वि
 य ॥ ॥ ॥ य स्मा त् सर्व हि तं प र्य व न हि तं मा या ज ग रु या त य त य स्मि नि रु ति आ
 ति वा न न म य क त्या न क त्या प न ॥ यं धा त्वा म न य ष प य रु व हि तं वि न्द ति मा रु ध

निर्मोकं सुखमाशु वदहि तद्वत्वापि न जानाति कथं जानामाह पशुः॥ अथ नानव
प्रदूय पीतवर्णं वदुःखं॥ अथ वक्रगणं वदुःखं॥ नृकटाक्षदक्षविभो॥ २०॥ जीवत्सावहि
संयुक्तं वनमालाविरूषितं॥ तदर्थं यत्किं विवक्षां यवाद्यं तव संघयां॥ सर्वदवसून
लघु रुक्माना मरुयुध द॥ शहि मां वा वृषभाक मयं विषय सागव॥ नान्यपश्च
मिला क॥ अस्याहं वृषां वज्रं॥ त्वामृतकर्मलाका क॥ असीदमधुसूदन॥ अथ
विभीतं यका॥ नानादृश्ये त्रिपीठि त॥ ह॥ नानाविता मूढ॥ कर्मपात्रे स्युक्तिः
॥ यतिनाहं महावीर्यं द्यावर्से सावसागव॥ विषयादकदृष्ट्या व॥ नागदवसमाक

न॥ इन्द्रियावरुणं हीनं रुक्मायाः शर्मिसे कूलं॥ निवाय अनिना लम्ब निःश्वसं व
कर्वन् व॥ मायना माहितरुग्नुमा मिसु विने पशु॥ नाना जाति सहस्रवृजा यमा
नः पूनः पूनः॥ मया जन्मा न्न न कानि सहस्रं यत्तानि॥ विविक्षा न्न नरुतानि॥ से
सावस्मिन्नज नार्दन॥ वदंसा आ मया जीवत्सावित्कानि विविक्षा निवा इतिहा मय
भानि॥ तथो गिल्या न्न न क॥ असेता वा धर्मता वाः म॥ अयाय वया अया॥ मया
पाजगनाथ कयवृद्धी तथापुशः॥ २०॥ अथा विमिश्रवन् भूता विधा भूतं गमास्तथा॥
विमिश्र विविक्षादृष्टा मातनश्च तथा मया॥ इन्द्रिया निवा नरुतानि॥ मया सोऽप्या न्न

कमला आकाशवाच्यवाः ॥ गङ्गा जलनाम्ना तय सुखा ॥ मया विरुतं तथा दुर्गम् काष्ठ
विष्णु विद्विना गङ्गा समरुद्वय मनरु तमयपुत्रा ॥ दृष्ट्वा नित्यान्व न कानि
लज्जे वने गङ्गा वद कवद्वधी कन गानि पाफा निवे मया ॥ मन्त्रे या निदृष्ट्वा नि
यममात्रे यमालया मया ता न्यनरु तानि ननक जातना कल ॥ किमि कीट यत आनी
दृष्ट्वा भूमि गय किर्ण मदिष्टा युगवाक्छेव तथा न्यर्षा वनी कसी ॥ द्विजातीनी वसव
र्षा गृडाणां वेद यानिष्टा वनीनी (अ) रिष्टा (अ) दविडाणां तय सिनी ॥ नृपाणां नृप
रुष्टा नी तथा न्यर्षा वद हिनी ॥ गृह्य तथा मन्त्रा देव वाहं यनः यनः ॥ गता सि
का यमानः १

सा सती नाथ रुष्टा नी वद (अ) नृणां दविर्त्वं वेदं वत्वं स्वामि त्वं वतथा गता हनी
मया हता धात्री हता मद्याति ता सुखा दहं मया न्ये व न्यथा मया दह मन कनी
धा विरु माह मरुद्राह कलगाणां कतने अक्षिष्टा सकृद्वे न्य मन्त्र (अ) ता नमा
नतः ॥ दविर्त्वं नृणां वद (अ) वत्वं वत्वं नविष्टे तव तस्मान् यगाहं नग तः
वत् ॥ कदा मन नकं वा स कदा स्व (अ) न्ये ता कदा मन न्या ता क वृ क मा
तिर्य्य नत वृत् ॥ जलयनु तथा वृत् वटी वद्व निवन्धिनी ॥ याति दृष्टं मधये वत्
द मन्त्र विष्टि ति ॥ तथा वाहं सन्त्र कर्म वद्व समापितः ॥ अथ (अ) द तथा मन्त्र

[illegible]

3371

ASHA ARCHIVES

12
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

ASHA ARCHIVES
3371

[illegible]

नि विष्णुनिद्रो त क त्म प्र ॥ ७४ ॥ धनं पाप ह नं व द रु कि म कि प दं नि वी रु
 अ स द ल रं य र्धं न द यं य म्म क स्य वि त् ॥ न ना सिका य मूर्खा य न कं घ्रा य मा
 नि ना न द ह न त य द द्या ला रु का य क द व न ॥ दा द र्थं रु कि य का य रु न नी ता नि
 ना य वा वि द रु का य सौ का य प्र द्वा न द्या न ग नि न ॥ ७५ ॥ ~~इ दं ह म स्ता इ वि ता भ~~
 रु रं का न व स रं स र्व मा रु द वा अ गे व वा भू रु ल द व लि रं स्ता रं म या रं य व वा ल
 म स्य ॥ य रं ल रं दौ वि म ला म्ब ना रं आ य कि नि ल्यं य व रं य वा रं त म कि रु अ ॥ पु वि
 रं ति रु रं म रु यं थ रं द त म ध वा रं ॥ ७६ ॥ न क ॥ स द वी रु व द ॥ ख रु का य ना ॥ य व वा

न त ता नि वा न्म ॥ स र्का स या ता स रि वा न क रं वि द् ॥ स म स्ता र वि न सा व रु त ॥ कि
 वि द्र या वा न्म यु ले प्र त र्वा य रु धं द नं य रु या रि व ले ॥ य रं न वि रु व ती रु क रु
 ज ग रु नी मा रु स र्व प द व ॥ ला क स ध न्म ॥ स यु वि ॥ स वि द्वा न्म स र्व रु मा रि ॥ स यु
 ले र्व वि द् ॥ ७७ ॥ ता स दा ता स रु स र्व व का य स्या रि रु कि ॥ य व र्मा रु मा र्थ ॥ ७८ ॥
 रु र्मा दि व रु र्मा ॥ ~~स र्व रु म वि रं द कान्म रु व स मा रु ॥ ७९ ॥~~ ॥ ध रु म रु ॥
 स ८ ॥ ८० ॥ वि ती रु क ॥ न व मि ॥ य र्वा न रु ॥ सा ध्वा ग ॥ आ दि र्वा व ॥
 क रु धी रु ग ना थ मा रु त्म धी का न्म रु व रु ॥

क रु धी रु ग ना थ मा रु त्म धी का न्म रु व रु ॥
 वा य दि न रु ॥
 क रु धी रु ग ना थ मा रु त्म धी का न्म रु व रु ॥

ॐ नमो गी सा क ना भा य ॥ उ व न ल य व न्दि ग ला क यु वं अ म ना धि प्रति मु ति व
 क्त व ली । म नि ना ज व लं य ति सि धि क र्त्त य न मा मि व ला कि त ना र्थ क र्त्त ॥ १ ॥ मृ ग ना
 ल ज वृ ष स वृ ष ध र्त्त व दू व दू ण ह वि द द ह ध र्त्त । अ मि ता रु त थ ग त मो लि
 ध र्त्त क न का उ वि रु धि त वा म क र्त्त ॥ २ ॥ कू टि वा म ल पिं ग ल धू मु ज टं ग नि
 वि म्भ स म द्वा ल पृ ष्ठ म र्त्त । क म ला य न ला व न ज्ञा व त र्त्त हि म र्त्त वि षा ड ल
 न ष्ठ य र्त्त ॥ ३ ॥ अ ध र्त्त जि त य दू ज ना रि स म ग व द वृ ज ग जि त म ध व र्त्त । व दू
 ज न वि रु धि त वा दू य र्त्त त त म म व ग म दू ल पा नि त र्त्त ॥ ४ ॥ मृ ग व र्त्त नि व ष्ठि

त न म ना र्त्त उ रु कू ड लं ग ति त ल म र्त्त । वि म लं क म ला द ल ना रि त र्त्त
 नि म ति त म ध व र्त्त म व ली ॥ ५ ॥ कू टि व ष्ठि त वि ष म व र्त्त ध र्त्त जि न कू ल
 दा द जि पा न र्त्त । व दू प थ म पा जि त ल व व ली । कू ल द्या वि नै व दू म अ
 क र्त्त ॥ ६ ॥ मृ ग व र्त्त जि क लं वि रु व कि क र्त्त स व र्त्त म व र्त्त म ति द ह ध र्त्त वि
 वि षा कू ल ना र्त्त म म ल व र्त्त क र्त्त म ल वि ता य म र्त्त म र्त्त ॥ ७ ॥ उ व न
 वि द्या व वि व क क लं त थ ना द य कू ल वि द्या ध क र्त्त । म नि नू य व र्त्त नि त य
 म र्त्त ग ज म र्त्त वि ल म्भि त र्त्त म र्त्त ॥ ८ ॥ प रि प र्त्त म र्त्त म र्त्त ल वृ ष ति । क

य वाग जलार्थव नित्य गति । श्री या तत्र का हि निवास गति क नृपमयव
क्षल वा वृद्धं ॥ २ ॥ रुति श्री श्री श्री आ या वि वा कि त श्व व रु द्वा व क स्य च रु द्वा
कि रि रु पी वि व वि तै वै ने स्ता रं स मा र्क ॥ ॥ श्री ता क ना थ पी ति त्र मु ॥ शु रं ॥ ॥

॥ नमः श्री महा मा वी द श ॥ ॐ अ म्भ महा मा र्था ष्ट क स्ता य म उ स्य व व नृ वि
मृ त्रिः अ नृ पृ च्छ न्दः श्री महा मा वी महा ग कि दे व ता ॐ का ली ती र्त्त ॐ महा का ली
ग कि रु द्वा का ली की ल र्क म म महा मा वी रु य रु त य न पि न्ना व उ द्वा वा रु स उ न्नि
नी ग कि नी स र्वा प द व ग म न का म न या य व म रु द्वा का म्भ सि द्धा र्थ ज य दि नि
या ग ॥ ॥ नमः ॥ व व नृ वि मृ त्रि य न म ॥ नि व र्ति ॥ वी कि रु द्वा य न म ॥ म र्थ
॥ महा मा वी महा ग कि दे व ता य न म ॥ रु दि ॥ का लि वी जा य न म ॥ रु द्वा ॥ महा का
ली ग क थ न म ॥ या द द्वा य ॥ रु द्वा का ली कि ल का य न म ॥ स र्वा र्ग ॥ म म महा मा

त्रीरुयनिवात्र नार्थजयविनिथाग॥ ॥ उं काली अयुष्ठायां नमः ॥ उं म
हाकाली तर्कनीत्यां नमः ॥ उं रुद्रकाली मक्षमायां नमः ॥ उं महा मायादवी
अनामिकायां नमः ॥ उं महादवी कनिष्ठायां नमः ॥ उं महारुयनिवात्र नीक
वतवपुष्ठायां नमः ॥ ॥ चर्वदयादि ॥ उं रुद्र वः स्वनां मिनिष्ठा तिका लिदि
वधनकला ॥ जयश्वयंतु ॥ ॥ रुद्रा माकाठ वाकी मसि मति न मूखी मूक क
नी वदनी नाहं रुद्रा वदनी जगदखिल मिदं यम मर्क कवामि । रुद्रायां भव
यकी कल द न ल सिखा स निरुपा ग मयां दे ते र्क वरु लारुः य विह न रुद्र य रा

पुनः स मली ॥ ॥ पुनः मय दवी जगतां प्रविर्णी दल निष्ठा नी सिधु दल ल
प्रविणी ॥ उं कालिकी वाधनकार्य सिद्धि । माया श्वक स्यात् ० त म नू य ॥ २ ॥
कोला र्था विग कूट हि मनि वि निख व पां कजा लां ध द ले सो वायु सि ध द ले म
न ध प्र व ग ता भ म वृ थ मृ ग ल द । या ता ल चा न त्रि क स क ल रु वि ग ता सर्व ला क
प सिद्धा सा म का मा न्द दा रु प ह सि न व द ना क रु मो डी य व रु ॥ ३ ॥ व रु
नी क म ल न्द सो म व द ना मा रु श्व वी ली ल या को मा नी वि प द र्पा नो ग न क नी
क का य भ वे श्व वी । वा ना ही घ न धा व र्ध र्ध न म र्खी ने ली व रु का य भ वा म रु ॥

गणदववृद्धसहितावर्कशुभांमातवः॥ ४ ॥ श्रीमद्देव्यावर्गलुहवमकूट
जटाहूतपादावविन्दमायन्मातंगकृष्णगिधवधवलापद्यपशयताकी
। कालामावातिवृद्धपदसितवदनदविमांवरुवरु॥ ५ ॥ वद्धारवद्धाश्र
काठोकपिलमूजुजटामधुलंयद्यथा न कृत्वा देव्या रुमांनेयुजमूवगिसि
व॥ गवर्वातार्कपक्षे॥ पूरुवकागवायेर्यममहिधमहागृगमादायपालो
पायान्नादीयमान॥ पलयमदि तथरेववंकालवाशि॥ ६ ॥ तैलायकैकवर्ग
यमयविवसकृष्टिकाकानवर्द्धलाहनेकनकृत्वाववर्गनिगदनमात्मनः

पादलेशा॥ दत्रासानासुरुनशुमतिजगदिदयाजवाकर्षुपूनावद्ध्याद्व
यवद्ध॥ धृजविततुजासापिदवीयसीद॥ ७ ॥ दंष्ट्रावोदमथ्वसिंसुववि
गतिजगद्विसर्वकलेनसंसावस्यानकालनववृधिववगल्लप्रवाद्धूम
धूम। कालीकापालिनीत्वंगवगयनवतायागिनीयागमूर्डावकाशुद्धावमा
नीमवगुरुयहवात्वंगिवाचधृष्टा॥ ८ ॥ सैयममहतिवृत्तामवृविनदग
ने॥ सहृष्टानांनिवारिमांलाभावद्धनृत्तद्विनततुजलटालीगंगानपविष्ठा
दृष्टारुते॥ परुते॥ पृथजद्यनघनावद्धनागल्यकांचीमूलासिक्कगहसाव

धिनमधूमदाहामनगानिगायां ॥ १० ॥ कर्कशं लुलु कर्कशं पुत्रिततयतिका
 वञ्चितं सिं कसुटाया साक्षिना तां ननाली घटि तमखमयी घटि ता यष्ट घटा
 । यष्ट यष्टा हटासु कसु गवदलवगादल वञ्चितायाः ॥ यायाकायालिनीमा
 दगानमथे घटाटिकाय तमासा ॥ १० ॥ कृत्वा पातालमूलाकुमकवगवण
 कृष्ण (गोराहिती) मांसस्य र्ण विवद्वमचन नममर्कधवा मटक व । कल्प
 कीरुदकाली यममहिषमहा गृगका नपहावी । याया ना वा दयनी पलय
 पविनतावद्वर्ककाववीर्ण ॥ ११ ॥ विद्युत् संहानद्यावदलदनन निखाहास

त ३

^{३७}
 दलानसू पातः पतांतं सुगयधितनवनिवृत्त्यर्थे नद्वाद्ध हटा सद्यः कल्या
 समिधसुवगजदि निज लवक पटीमादधना वा मञ्जु वष्टु मञ्जु मथमथितनि
 नञ्चर्वयनीयना ॥ १२ ॥ वामक (धु) मृगांकी पलय पविगर्तं दकि (न) सुय
 विम्वर्क (१) नरुगहा वय विविकटजटा हूतं क कुरुमाली । स्कंधवद्धा वगेल
 कजनिगदय तं वद्वर्ककावहावा । यधस्मा धसुटां नीयति नय नवि (धी) पान
 याशरुवत्सा ॥ १३ ॥ चर्वनी महिषवर्णं पकटकटकटा गद्य संधा तमर्ग कर्वा
 (न) पतम (ध) सकदकदकहाहास्य मर्ग कर्मांगी । निह्यं निह्यं पगका उमनञ्जि

गा २

नी॥ १७ ॥ मात्री वाग मसूत्रिका रुयह नं गीत क वाच्चाटनी सी सोला अदया
 वरु ७ विक नं वरु ४ सु. प. ग. य. द. त. न्मा. र्था. श्र. क. म. न. मि. श्र. रु. ल. द. स्का. र्ण. जि. र्म. ध. र्म.
 १२०७ ॥ ॥ रु. नि. श्री. नृ. द. या. म. स. का. ली. र. व. र. उ. व. न. नृ. चि. वि. व. चि. तं. म. हा. मा.
 र्था. श्र. क. म. स. पू. र्ण. ॥ ७८ ॥ ॥ स. ८८८ का. लि. क. ध. द्वि. ॥ मू. पू. र्ण. व. र्ण. न. लि. खि.
 तं. र्था. श्र. क. म. स. पू. र्ण. ॥ म. हा. मा. त्री. द. वी. प. स. ना. मु. ॥ ७८ म. मु. स. व. र्ण. दा. ॥ ॥

॥ नमो नमो नमो नमो ॥ ॥ वेदवत्त उवाच ॥ इहा गच्छति सत्त्वात् वेदवत्त
 यत्रिन्धुः । अवेष्टुवात्तगृहीत्वा च आनीर्य न नका नय ॥ ॥ ऊमना जानद्वय
 निहात ॥ शङ्खचक्रय निमृग्य साक वदाव मनूय नि का सद् निवेष्टुवशकदय
 मत्त अवेष्टुवशक न न क सहि व क्षयाव इत न धार्त्त ॥ १ ॥ इहा वाच ॥ किं नृयं वे
 द्वा नां च अवेष्टुवा नां कथं न च । तत्सर्वं धामि च्छामि तन्मकुदि विवस्वतः ॥
 श ऊमना ऊ वेष्टुवम नूय गथिद अवेष्टुवक्ष गथिद ऊय निश नम सिया क न
 मात्त ॥ २ ॥ वेदवत्त उवाच ॥ यतिवत्ता गृह्यस्य सग्यवादी सदा न न अतिथ्य

अरुक्ता च दृष्ट्वा च दूनमी नयत् ॥ ३ ॥ यतिवत्ता मिता दूथाम सग्यवादी अतिथ
 अया गतयु जाया क थथिदम नूय नि च्छय निश न मिस्वान स्वयं मत्त ॥ ॥ कपि
 नाया नयत्तव्यं त्ममयं गृह माहूर्त्त । पूजनं लिखितं दत्त दृष्ट्वा च दूनमी नयत् ॥
 ॥ ४ ॥ स नानं सियी वसा नहिदा वत न रुन् सा सखि न व थिलपुत्त रुन् कसद
 वथा यात्त रुन् सदा द वपू जाया यद्वा व थथिद थाम च्छय निश न स्वयं मत्त ॥
 ॥ ॥ दानवनी गधु की च गिला ए अर्चयत्त दा ए का की की यत्त जाय दृष्ट्वा च दून
 मी नयत् ॥ ५ ॥ दानवनी या गधु किया लक्ष्म वा सा निराम पूजा यत्त नयात्

हृन् याका न वादा वडा यया न वक्तु कुमिस न स्वयं मत ॥ ॥ गीत वाद रुकु ग्रा
उ न सी मा ल रु व नी गं ख च कु क रं द ह द द्वा च न मी न य त ॥ ॥ सु ना नं गी क
या क व न मे हा ली व वि थ यी व वा उ न थ यी व ह नं उ न गी मा न ल का घा या व च
नी व ह नं दानि का या विं क द यी व उ क्त कु मी स न मि ख न स्व यं म त ॥ ॥ अग्नि हा
रं ग वा न र्क व दा श्या स य ना य नं कालं व द न स न्धा द द्वा च न मी न य त ॥ ॥
अग्नि हा र या क वा क्त न ह नं ग म धू न न क व द ह नं व द वा वा क्त ल ह स न्धा यो क
वा क्त ल क य नि स न स्व यं म त ॥ ॥ म सु क क्षा र्थ त य सु उ न सिं ह दि त य ना ग म वि

नं ग म वि नि र्ग द द्वा च न मी न य त ॥ ॥ ८ ॥ वि द्म रु कि ड व क्त उ न सी मा ल ल का घा
या व द न क्त ग म वि द धा व न य क्त कु मिस न स्व यं म त ॥ ॥ सु व ना उ म न सृ त्वा गी
गा ग रु लु भा क्त नं य क्त ना म स रु भु न द द्वा च न मी न य त ॥ ॥ ९ ॥ सु व ना उ वि द्म या
म वि म न न स म द क्त गी ता ग रु लु भा क्त ल यं व ना म य न य क्त क य नि स न स्व यं म
त ॥ ॥ य रु क्त नं व ध म्मा त्मा उ न गी का न लं य थ वा रु क्त या स मा सृ त्वा द द्वा च न
न मी न य त ॥ १० ॥ ग न ध म्मा त्मा द त ह नं उ न गी मा या अ व न मा या क स क य नि
स न मि ख न स्व यं म त ॥ ॥ नू डा क्त व न व द्या क ल व म सु क क न क ग व मि

वक्ष्यात्वा च दृष्ट्वा च न मी नयत् ॥ ११ ॥ नृदा कया मरु मा दं द क्ष नृदा क न म स्का न
या क क्ष नृदा क ग न या त स भा ने स ला हा त स त व क्ष ह न्व ना ना य न म हा द व क्ष
वल य क्ष कृ य नि भ न स्व य म त ॥ ॥ दू ता वा च ॥ अ त य नं य व क स्व ध र्म ना ऊ स
वि स्त नं अ वे द वा नां अ मा वा नी गी र्थ क थ य व य ॥ १२ ॥ श ध र्म ना ऊ ह न्व म
व ता द न वि स्ता न न क स वि क्षा दू न अ वे द व अ मा वा नी सा ख क ढा श य रु कि
न प ॥ वे व स्व न वा च ॥ पा पि स्त रु य तां दू ता वि स्था ता पा य क र्म ना अ नृ ता वा ल
द्या नि ॥ आ नि र्ग न न का न यं ॥ १३ ॥ श दू त पा य क र्म सा ख द ढा रु स ख हा क क्ष

आत्मा या त क क्ष कृ य नि श न न न क या क स क्ता व ॥ ॥ ग ह र्था व क्ष ह र्था व क्षी
ह र्था वा न या त की य गू नां घा त क र्त्वे व आ नि र्ग न न का न यं ॥ १४ ॥ ग ह र्था व क्ष
ह र्था शी ह र्था वा ल ह र्था ला क क्ष य स त्या क क्ष न न क स हि व ॥ ॥ अ श्व रू कृ द
नं वे व क्षा नि न ग य थ कृ द नं सा क व लं स ग न्वं य आ नि र्ग न न का न यं ॥ १५ ॥ व ल ग
त सि मा अ व ल मा क्ष द क्ष सा ग्म ० स न कू क्ष वा क्ष न न सा क स न कू क्ष न न क स
नि व ॥ ॥ क न्या वि की ह र्थ वि की ग म वि की न स वि किय मा न वा न म नृ डा वि की आ
नी र्ग न न का न यं ॥ १६ ॥ क्षा व मि व क्ष न स मि व क्ष सा मि व क्ष स ल मि व क्ष म नृ क

मिव द्रु न न कसति व ॥ ॥ य न उ य य न य ॥ विख्याता या य क म न । नी या सा
चा स धा र्जि न । नी र्ज न न का न र्ज ॥ १० ॥ य न उ य स य न यी या क सा रि द्रु का
जा त द्रु या आ मा धा त क या क द्रु न न क स ति व ॥ ॥ मा ता पि ता वि द्या गी रु
यी शा ना स हा द न । हि त का नी य त्रि श्रा र्ज आ नी र्ज न न का न र्ज ॥ ११ ॥ मा म व वृ त ता
क ह द दा कि जा य व धि थी । ए म स्त्री थ व त हि त या क द्रु श्रा उ न पू द्रु न न क स ति व ॥
॥ ॥ अ मा न्यं द ह ग म स्त्रा लि अ मा न्यं स वृ ती र्थ के । अ मा न्यं वा द्रु न न व आ नी र्ज न न
का न र्ज ॥ १२ ॥ य व स नी न ती र्थ जा न न सा । अ मा न्य या क द्रु न न क स ति व ॥ ॥

य च न नि वे द्य वा नां वि वा द कू नू त य था । त पि वृ था य कू र्वा नि । आ नी र्ज न न का न
र्ज ॥ १३ ॥ वि द्रु र कि द्रु व वि वा द या क द्रु श्रा उ न म वृ था धा य थ द्रु न न क स ति
व ॥ ॥ स्र यं द र्ज स्र यं द र्ज य रु क ह नि वा स ना य द्वा नि मे धू नं कू र्वा दा ती र्ज न न
का न र्ज ॥ १४ ॥ य व द र्ज थ मं लि का व र्थ मं द य का व थ मं रू त कू द्रु ह नि वा स कू द्रु
उ या र न म वा द द्रु य वृ का ल स मे धू न या क द्रु न न क स ति व ॥ ॥ वा द्रु न १४
क रि या वे द्य शु द धि र्द र क र्ज था । अ म ली म नु वा दी न । आ नी र्ज न न का न र्ज ॥
॥ १५ ॥ वा द्रु न ना जा न थ कू न न शु ड या स्त्री व स र्ग या क द्रु ह नं म नु म ला

[illegible]

॥ वृत्त वसुजातसथकावनवथोस. हावूवसतनतियावइवदयाक. वयय
मेकावथोस. वृपनिवादा ॥ ॥ नीनकू (७) मयरा (७) गृहवाचमका नयत
रुमलयरुनकूय. तरुविशममदूतका ॥ २० ॥ ॐ सिगुलिकोंलस. ध्वकोंसम. कुं
गुलिसमालयाकथोस. दूककूस. रुनरुथीस. वृपनिवादा ॥ ॥ ॐ ॐ नकू
यकूच. वलानवठुनयथा. सहिवांनूकपृष्ठ. तरुविशममदूतका ॥ ॥ ॐ ॐ
नम. कूयकूस. वका नस नस. मसयाउनूकस. धूसलस. वृ
चूनेक. नचिडं. यदयक. गृहयथा. ॐ नविगतनीयन.